माधवी

क्ह्रR द्व्रप्रःष्क

By

SYAMLAL M.S

ASST.PROFESSOR,

DEPT.OF HINDI,

SH COLLEGE, THEVARA

भीष्म साहनी

- रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे भीष्म साहनी (८ अगस्त १९१५- ११ जुलाई २००३) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे।
- १९३७ में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने १९५८ में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की।
- भारत पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ-साथ ये व्यापार भी करते थे।
- विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में लिखने का काम किया।
- बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जा मिले।
- इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने।

- १९५७ से १९६३ तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे।
- यहां उन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया।
- १९६५ से १९६७ तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पात्रिका का सम्पादन किया।
- वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो-एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन) से भी जुड़े रहे।
- १९९३ से ९७ तक वे साहित्य अकादमी के कार्यकारी समीति के सदस्य रहे।
- भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है।
- वे मानवीय मूल्यों के लिए हिमायती रहे और उन्होंने विचारधारा को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया।
- वामपंथी विचारधारा के साथ जुड़े होने के साथ-साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी आंखो से ओझल नहीं करते थे।

- ष ह्रवश्वहृ ञ्घ क्ष्भ्वहृबड् ड्ड् श्क्ष रवळ् क्ज्ञR ढ्वणाष्ह ड्व □स्कड्ड श्□ढ्क्ष्य २ चण ळ्क्ष्ह
- क्ष्ँळ् क्ष्ष ड्ड् च्छ्ढ्ष ड्ड् श्चड् ज्ञ्ा nघर् श्ड्ग्व पह्न न्वड्प्व च्छ्श्ड्ष २ ह ष्ह ढ्ज्ग्ल्व ड्ड् श्घड् ञ्ह्श्द्घnघर्हग्र घणळ्प्ह्ह
- क्ज्ञR ढ्वणाष्ह श्र्गिह श्फ ड्ज्ञ्ा ड्ड् न्वष्ड् रक्ष्ड् २श्कष्ल्व □चघक्र ढ्वणाष्ह ड्ड् ध्ज्ञ्ष्ड् क्ज्ह ळ्ह्ह
- क्ष्ँळ् १९७५ रवळ् ल्रवढ् ड्ड् श्चड् ढ्क्श्णड्ड २ ड्वल्रक्ह ह्घWक्घ, १९७५ रवळ् श्ट्ढ्ज्ञ्ाक्श्र्
  च्छ्ढ्ड् २ञ्वम्ब्र (हत्र न्व□ ढ्घड्वघ), १९८० रवळ् ड्भ्ज्ञ्ा ड्श्ट्ग्ष घ्वस्बढ्ब्र २ढ्ज्ञ्ाश्ढ्ड्ट्ष
  ड्व च्ज्ञ्ाब्ढ् २ञ्वम्ब्र, १९८३ रवळ् ढ्ज्ञ्ाश्कग्ल चष्म ष्ड्यच २ञ्वम्ब्र ल्व्व १९९८ रवळ् क्वघल
  ढ्घड्वघ ड्ड् ह्ीक्ष्र् २ चत्रड्घर् ढ्ड्श्कक्ष्ल श्ड्ग्व पग्वह्ह
- क्ष्षड्ड् क्ष्हौंवढ् ल्रवढ् हघ १९८६ रवळ् ड्ड् श्□ □ ड्व श्रवक्ब्र् क्ह श्ड्ग्व पग्व ळ्क्ष्ह

भीष्म साहनी

पुरस्कार :- साहित्य अकादमी पुरस्कार,
शिरोमणि लेखक पुरस्कार, एफ्रो–एशिया राइटर्स एसोसिएशन का लोटस अवॉर्ड, सोवियत लैंड नेहरु अवॉर्ड

उपन्यास – झरोखे, तमस, बसन्ती, मय्यादास की माडी, कुन्तो, नीलू निलिमा निलोफर
कहानी संग्रह – मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर
नाटक दृ हनूश, माधवी, कबीरा खड़ा बजार में, मुआवजे
आत्मकथा – बलराज माय ब्रदर
बालकथा– गुलेल का खेल

"भारत जैसे बहुभाषी, बहुजातीय, बहुधर्मी किसी भी देश में किसी भी जातीय सवाल का हल हिंसात्मक दबाव द्वारा नहीं खोजा जा सकता."

(8 अगस्त1915 – 11 जुलाई 2003)

/panchayattimes

माधवी - नाटक

- भीष्म साहनी के नाटकों में शायद “माधवी” ही है जिसकी चर्चा सबसे कम हुई है बावजूद इसके कि वह पौराणिक कथा पर आधारित होते हुए भी एक फेमिनिस्ट नाटक है।
- प्रस्तुत आलेख ‘माधवी’ का पुनर्पाठ फेमिनिस्ट दृष्टि से करने और उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित करने का प्रयास करता है।
- एक बेहद नाटकीय और सम्भावनाओं से भरे इस कथानक में न सिर्फ स्त्री के शोषण और समाज मे उसके दोयम दर्जे के लिए उत्तरदायी कारणों को समझा जा सकता है बल्कि यह देह व ताकत की राजनीति को भी उघाड़ कर रख देता है।
- स्वयं भीष्म साहनी के शब्दों में ‘पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की अवहेलना और शोषण की कहानी’ है ‘माधवी’ लेकिन मज़ेदार यह है कि लेखक ने ‘आज के अतीत’ में यह स्वीकार किया कि माधवी की कथा में अनंत सम्भवनाएँ थीं और इसे और अधिक धैर्य से लिखा जाना चाहिए था।

❖ यह सत्य है कि एक पितृसत्तात्मक और धर्मान्ध समाज में जीते हुए स्त्री की अवहेलना और शोषण की कथा लिखना बेहद धैर्य के साथ ही सम्भव है।

❖ यह भीष्म जी की सम्वेदनशीलता ही थी कि त्रिलोचन शास्त्री से माधवी की कथा सुनते ही वे व्यग्र हो उठे इसे लिखने के लिए और यह अनायास नहीं था कि हीरो वरशिप की आदी रही संस्कृति वाले देश में दानवीर ययाति , गुरु विश्वामित्र और एक लगभग असम्भव गुरु दक्षिणा देने वाले शिष्य गालव जैसे तीन पुरुष पात्रों के होते हुए नाटक के केन्द्र में माधवी आ गई।

❖ क्रच्क्र् ण्ह क्रहR न्ह ड्र्क्रस्क्रष्a «श्रHड्ड्रार् ढ्क् ब्क्रक्रअ्ल ष्ण्हत्र ब्क्र् च्क्र्ड्ष ञ्क्र्रक्रश्क्ह क्र् न्हत्रष ढ्क् क्ष्न्क्ह श्रत्रम्द्र्ष्र ड्न्त्र ड्र्ह्न ढ्रव्रb dह न्क्रश्र्ल क्र् त्रल्ब्रक्रष ण्व्रच्क्र्ल क्र् ढ्व्रळ न्ड्र्न्ड्घ ट्ड्र्र् ड्ह ह्घ्ड्घ्र ड्र्ह्न क्ष्ढ् ड्ह श्र्घ्रत्र्ल्घ्ल्र रक्र् व्क्र्ढ ह्व्र घ्ण्क्र् व्क्र्ह

- आलोच्य नाटक स्त्री देह और पितृसत्तात्मक व्यवस्था मे स्त्री के शोषण की कई परतें एक साथ खोलता है।
- 1984 मे लिखा गया था माधवी और अपने एक साक्षात्कर मे भीष्म साहनी ने स्वीकारा है कि इसे लिखते हुए कोई फेमिनिस्ट विचार उनके मन में नहीं रहा, लेकिन सत्य का शोध लेखक अक्सर लिखने की प्रक्रिया में ही करता है।
- इस नाटक को लिखने की प्रक्रिया में ही भीष्म साहनी को एहसास हुआ कि नाटक की मुख्य पात्र माधवी है और उसी के पक्ष से कथा कही जानी ज़रूरी है।
- 80 के दशक तक स्त्री विमर्श और शोषण के अंतिम उपनिवेश के रूप मे स्त्री देह को पहचान लिए जाने से लेखक कितना परिचित था यह कहना मुश्किल है लेकिन इतना तय है कि माधवी की कथा कहते हुए भीष्म साहनी ने हिन्दी साहित्य में स्त्रीवादी देह विमर्श में एक महत्वपूर्ण शुरुआत की।
- माधवी का कंटेंट इतना सीधा नहीं है कि उसे स्त्री शोषण की कथा कहकर विराम लिया जा सके।

THANK YOU